नवंबर - 2024

दैनिक नैतिक प्रभात

बाल कहानी संग्रह

मिशन शिक्षण संवाद

दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह)

अनुक्रमणिका माह - नवंबर 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1	कपट	शालिनी	1
2	सोच में बदलाव	मृदुला वर्मा	2
3	मनोविज्ञान	सरोज डिमरी	3
4	पुस्तक या मोबाइल	शमा परवीन	4
5	हुनरमन्द	रचना तिवारी	5
6	गलती	शालिनी	6
7	साइकिल	शमा परवीन	7
8	अनोखा सिक्का	अंजनी अग्रवाल	8
9	हिरन और चूहा	दमयन्ती राणा	9
10	आत्मशक्ति	डॉ० सीमा द्विवेदी	10
11	फूलवती का बगीचा	धर्मेंद्र कुमार	11
12	अनमोल पेड़-पौधे	मृदुला वर्मा	12
13	नटखट लक्ष्मी	रूखसार परवीन	13
14	मीनू और बीनू	शमा परवीन	14
15	घोर लापरवाही	शालिनी	15
16	नानी और पिन्टू	शमा परवीन	16
17	संगति का असर	मृदुला वर्मा	17
18	फहद	रूखसार परवीन	18
19	काबिलियत	दीपक कुमार	19
20	किस्मत का खेल	पुष्पा शर्मा	20
21	हुनर का महत्व	अंजनी अग्रवाल	21

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 04-11-2024
199

बाल कहानी

कपट

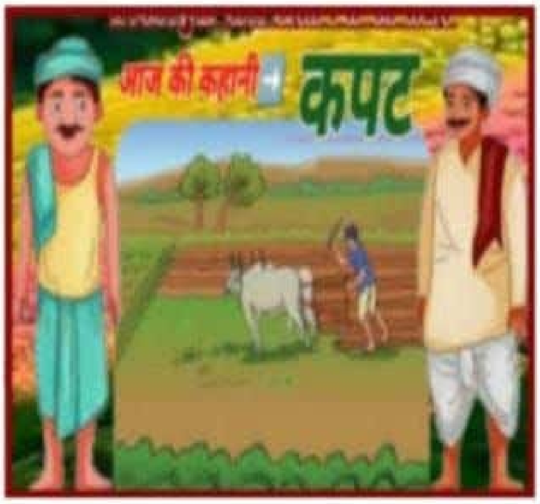

अनोखेलाल और भोलेशंकर दोनों गाँव में रहकर खेती करते थे। दोनों दोस्त थे। अनोखेलाल मन ही मन में भोलेशंकर से जलन रखता था। अनोखेलाल और भोलेशंकर दोनों के खेत में फासलें खड़ी थीं। उनके खेत नहर के पास थे।
अनोखे लाल के खेत में मक्का और भोलेशंकर के खेत में मूँगफली की खेती थी। अनोखेलाल को भोलेशंकर की मूँगफली की खेती देखकर बहुत जलन हो रही थी क्योंकि इस समय मूँगफली का भाव बहुत अच्छा था। अनोखेलाल को लगता था कि भोलेशंकर अपनी मूँगफली को मन्डी में बेचकर उससे अधिक पैसे कमा लेगा।

अनोखेलाल ने एक चाल चली। अनोखेलाल ने खेत के बगल से जाने वाली नहर के पास में लगे बम्बे को रात में काट दिया। पानी काटने से भोलेशंकर की मूँगफली की फसल पानी में डूब गयी परन्तु भला रहा कि दो-चार दिन के बाद में मूँगफली सड़ने से बच गयी और अधिक नुकसान नहीं उठाना पड़ा। एक दिन अचानक से आसमान में तेज बादल आ गये और तेज बरसात होने लगी। ऐसी बरसात हुई कि तीन-चार दिन तक बन्द नहीं हुई। अनोखे लाल की खेत में पकी हुई मक्का बुरी तरीके से खराब हो गयी। अनोखेलाल सर पकड़कर रोने लगे।
भोलेशंकर को जब यह पता लगी तो वह अपने मित्र के पास गया और उससे कहा,-"अनोखेलाल! तुम चिन्ता ना करो.. कोई बात नहीं! मूँगफली की फसल महँगी है। मैं तुम्हें बेचकर कुछ पैसे दे दूँगा। तुम शोक मत करो।" अनोखेलाल को यह बात सुनकर बहुत ग्लानि महसूस हुई। अनोखेलाल मन ही मन सोच रहा था कि वह तो अपने मित्र का बुरा करता रहा और मित्र उसके भले के लिए सोच रहा है। उस दिन के बाद अनोखेलाल ने अपने मन से शत्रुता का भाव निकाल दिया और सच्चे दिल से भोलेशंकर को अपना मित्र मानकर जीवन-भर मित्रता निभाता रहा। हाँ! यही उसका सच्चा पश्चाताप था।

संस्कार सन्देश-

जो दूसरों का अहित करते हैं, किसी न किसी रूप में उनका भी अहित होता है।

कहानीकार
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैंनपुरी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 05/11/2024
200

बाल कहानी

सोच में बदलाव

रामू गरीब किसान था। उसके तीन बच्चे थे। दो लड़के एक लड़की। रामू के माता-पिता भी उसके साथ रहते थे। रामू को अपना परिवार चलाने में बड़ी तंगी का सामना करना पड़ता था। रामू ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। उसके माता-पिता और पत्नी अशिक्षित थे। रामू के गाँव में बेटियों को पढ़ाया-लिखाया नहीं जाता था। गाँव में उन्हें बोझ समझा जाता था।

रामू के दोनों बच्चे अब बड़े हो चुके थे। रामू ने उनका दाखिला सरकारी स्कूल में करा दिया। जब रानी की उम्र पढ़ाई के लिए हुई, तब उसका नाम विद्यालय में नहीं लिखाया। अध्यापकों के कहने पर रामू कहता, "बेटी! पढ-लिखकर क्या करेगी? उसकी माँ भी 'हाँ' में 'हाँ' मिलाती और कहती, "बेटी तो पराया धन है। आखिर करना तो उसको चूल्हा-चौका ही है।" अध्यापकों के बार-बार कहने पर रामू, रानी का दाखिला करा देता है। समय बीतता है। जहाँ रानी मन लगाकर पढ़ाई कर रही थी, वहीं उसके दोनों बेटों का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था। वह विद्यालय से आकर बस्ता फेंककर खेलने निकल जाते थे।

रानी कक्षा पाँच में आ गयी थी। कक्षा अध्यापक ने उसकी मेहनत और लगन देखकर उसका नवोदय का फार्म भरवा दिया था। अब तो रानी को पढते-पढते सुबह से शाम हो जाती, वह दिए की रोशनी में भी पढ़ाई करती-रहती थी। समय बीत रहा था। वहीं उसके दोनों भाई विद्यालय में पढ़ाई की जगह झगड़ा करते थे और आए दिन उनकी शिकायतें आतीं थीं।जब परीक्षा का रिजल्ट आया तो रानी ने परीक्षा न केवल उत्तीर्ण की बल्कि जिले में पहला स्थान प्राप्त किया था।

अब तो रानी की चर्चा चारों ओर हो रही थी। विद्यालय में सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें रानी के पूरे परिवार को बुलाकर सम्मानित किया गया। रामू की आँखों से खुशी के आँसू झलक पड़े। वह बोला कि, "हमें बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं करना चाहिए। दोनों को उनकी योग्यता के अनुसार पढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए।"

सभी गाँव वालों ने तालियाँ बजायीं और प्रतिज्ञा की कि, "वह भी रानी की तरह अपनी बेटियों को पढ़ने का सामान अवसर देंगे और बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं करेंगे।" आज सभी की सोच में परिवर्तन हो गया था।

संस्कार सन्देश-

हमें बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं करना चाहिए। उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार पढ़ने का सामान अवसर प्रदान करना चाहिए।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)

रोशनी ने देखा कि उसका पति कमाई कर उसी के खाते में रुपए जमा कर देता है। उसको एटीएम कार्ड चलाना भी आता है। इसलिए उसने गाँव से बाहर निकल आना उचित समझा।
अगले दिन सास-ससुर को मनाया बुझाया। बेटे के विद्यालय से पत्रजात निकाल कर लायी और मायके से लगे बाजार में किराए पर घर लेकर रहने लगी। नये परिवेश में उसे आनन्द आ रहा था।
अगले दिन रोशनी ने मानिक का पंजीकरण एक निजी विद्यालय में करवाया। मानिक को विद्यालय में छोड़ दिया। मध्यान्तर होते ही मानिक कक्षा से बाहर निकला। उसके हाथ में थाली थी। वह आदतन प्राँगण के किनारे पर जाकर आराम से बैठ गया। आया ने उसे इस तरह बैठा हुआ देखा। उसने कहा-, "तुम यहाँ क्यों बैठे हो?"

मानिक बोला-, "भात खाने के लिए।" आया ने उसे झिड़क कर गवांर कहा।
मानिक अपनी थाली उठाये चला आ रहा था। इस समय सारे बच्चे उसे देखकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे थे।
वह सिसकियाँ ले रहा था और मन में संकल्प लिया कि-, "कल से नहीं आना यहाँ, अपने स्कूल जाऊँगा। मेरा स्कूल कितना अच्छा था!"
लेकिन जिस बेटे के लिए वह घर-गाँव छोड़कर आयी, उसे नया वातावरण बिल्कुल सही नहीं लगा।वह माँ से बोला-, "यहाँ भात भी नहीं मिलता।"
बच्चे के उदास होने से रोशनी का मन उचट गया। वह फिर से गाँव वापस आयी। मानिक अपने साथियों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। अब वह अपने विद्यालय में बहुत प्रसन्न नजर आता। मेहनत से अपना पठन-पाठन करता।
अब उसके पास गाँव और शहर ये दो विकल्प हो चुके थे। माँ बार-बार शहर की खूबियाँ गिनाकर उसे आगे बढ़ाने के लिए जिज्ञासु बनाती। मानिक ने बारहवीं पास किया। बीटेक करने के लिए हैदराबाद गया। हैदराबाद में उसमें आमूल-चूल परिवर्तन किया। वह एक अच्छा इंजीनियर बनकर धन और शोहरत कमा रहा है।

संस्कार सन्देश

शिक्षा हमें आनन्ददायक परिस्थितियों में जीवन जी करके आगे बढ़ना चाहिए।

लेखक

सरोज डिमरी (स०अ०)राज०
उच्च प्रा० वि० घतोड़ा, कर्णप्रयाग
(चमोली)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -08.11.2024
202

बाल कहानी

पुस्तक या मोबाइल

"मित्र! तुम दिन भर पढ़ते रहते हो! आज रविवार है। यहाँ सब लोग खेलने आये हैं। एक ही दिन मिलता है खेलने को। हर दिन तो स्कूल जाना ही पड़ता है। किताबें पढ़नी ही पढ़ती हैं। चाहे टीचर के डर से, चाहे अभिभावक के डर से या दोस्त हँसी उड़ा रहा है, इसके डर से। कभी न कभी पढ़ना ही पड़ता है, पर आज तुम्हें देखकर मुझे गुस्सा आ रहा है। मैं इतनी मेहनत से खेल की टीम बटोर कर लाया हूँ और तुम अपने साथ किताब लाकर यहाँ बैठकर पढ़ रहे हो? चलो क्रिकेट खेलते हैं।"

"मोनू! मेरा पढ़ने का मन है। तुम क्रिकेट खेल लो। मुझे कल टेस्ट देना है। तुम्हें पता नहीं, कल हिन्दी का टेस्ट है और दस में नौ नंबर लाना जरूरी है। बताओ, क्या मुझे टेस्ट नहीं देना है?"

"थोड़ी देर खेल लेते हैं, फिर घर जाकर तो पढ़ाई करना ही है। हमें भी तो पढ़ना है। वैसे भी डाँटकर बैठा देंगे घर पर पढ़ने को। वहाँ थोड़ी क्रिकेट खेलेंगे, सिर्फ दो-ढाई घन्टे हैं हम लोगों के पास। चलो खेलते हैं, कभी तो बात मान लिया करो।"

"ठीक है मित्र! मैं बस थोड़ी देर ही खेलूँगा, फिर मैं घर चला जाऊँगा।" "वह देखो, टीनू तो मोबाइल में लगा है! क्या तुम नहीं खेलोगे?"

"अरे मैं नहीं खेलूँगा। मैं मोबाइल में गेम खेल रहा हूँ।"

"और तुम आओ! तुम लोग भी खेलो।

धीरे-धीरे सभी लोग टीनू की तरफ चले जाते हैं और उसके साथ मोबाइल में गेम खेलने लगते हैं। सोनू और मोनू भी थोड़ी देर में टीनू के साथ मोबाइल देखने लगता है, फिर कुछ देर बाद सोनू को चिन्ता होती है कि कल टेस्ट है। मुझे चुपचाप यहाँ से निकल जाना चाहिए और घर पर पढ़ाई करना चाहिए। सोनू सभी से कहकर कि 'मैं घर जा रहा हूँ' इतना कहकर वह अपने घर चला जाता है और पढ़ाई करता है। अगले दिन सभी लोग स्कूल पहुँचते हैं। सोनू दस में से आठ नंबर लाता है और सोनू के सभी दोस्त टेस्ट में बुरी तरह से फेल हो जाते हैं। टीचर सभी से टेस्ट में फेल होने का कारण पता करती है तो पता चलता है कि यह सब मोबाइल में गेम खेल रहे थे। टीचर बहुत प्यार से समझाती हैं कि, "यह उम्र तुम्हारी पढ़ाई करने की है न कि खेलने की है, न कि मोबाइल की लत लगाने की है।" इस पर टीनू जवाब देता है, "क्या करूँ मैम! मुझे एक पल भी मोबाइल छोड़ना अच्छा नहीं लगता है। यही वजह है कि मैं विद्यालय जल्दी नहीं आता हूँ। सुबह बाबा भी बहुत डाँटते हैं, पर मैं क्या करूँ? मेरी आदत छूट नहीं रही है। मैं चाहता हूँ पढ़ना, मगर पढ़ नहीं पाता हूँ। किताबें मुझे अच्छी नहीं लगती हैं। मुझे मोबाइल अच्छा लगता है। आप लोग क्यों नहीं समझते हैं इस बात को मेरी? एक मेरे न पढ़ने से क्या होगा? आप ऐसा करें कि मेरा नाम काट दीजिए।" टीचर ने कहा, "बेटा! चलो, ठीक है! मैं तुम्हारा नाम काट दूँगी, फिर तुम क्या दिन भर मोबाइल में गेम ही खेलोगे? रही बात एक के न पढ़ने की तो टीनू बेटा याद रखना, एक व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से देश जुड़ा होता है। हमें अपने देश के लिए पढ़ना चाहिए।" टीनू को बात समझ आ गई। टीनू ने वादा किया कि, "मैं अब मन लगाकर पढ़ाई करूँगा। मोबाइल पिताजी को दे दूँगा और विद्यालय भी रोज आऊँगा।" यह देख-सुनकर सभी बहुत खुश हुए।

संस्कार सन्देश

हमे धैर्य रखना चाहिए। जिद नहीं करना चाहिए।

लेखिका

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com

https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -09.11.2024
203
बाल कहानी

हुनरमन्द

जूलिया कक्षा आठ की छात्रा थी। वह पढ़ने में बेहद कमजोर थी। गणित विषय तो जूलिया को समझ ही नहीं आता था। पढ़ाई-लिखाई में कमजोर होने के कारण जूलिया के माता-पिता उसके भविष्य के बारे में सोचकर सदैव चिन्तित रहते, परन्तु जूलिया को ड्राइंग का बेहद शौक था। वह कक्षा में पढ़ाई के समय भी चित्र बनाती। जब शिक्षक जूलिया को पढ़ाई के समय चित्रकला में मगन देखते तो उसे बहुत डाँटते, परन्तु जूलिया अपने काम में ही मस्त रहती। उसका यह व्यवहार देखकर विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने एक दिन जूलिया के माता-पिता को विद्यालय में बुलाया और जूलिया को कक्षा आठ से कक्षा पाँच में कर दिया। यह सुनकर जूलिया के माता-पिता बहुत दु:खी हुए, लेकिन जूलिया को इस बात की खुशी हुई कि अब उसे कठिन विषय नहीं पढ़ने पढ़ेंगे और चित्र बनाने का ज्यादा समय मिलेगा। जूलिया अपनी कक्षा में बैठे-बैठे शिक्षकों के चित्र बना देती। आसपास के प्राकृतिक वातावरण को देखकर वह अपने चित्रकारी के माध्यम से कागजों पर उतार देती। उसकी चित्रकला की लोग खूब सराहना करते। जूलिया के रिश्तेदार जब उसके घर आते तो जूलिया की चित्रकला देखकर प्रसन्न होते। वे अपने लिए भी जूलिया से चित्र बनाने को कहते। यह देखकर जूलिया की माँ कभी-कभी बहुत गुस्सा करती, पर जूलिया अपने चित्रकला में सदैव प्रसन्न रहती है। समय बीतता गया। जूलिया अपने चित्रकला के माध्यम से सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई आगे बढ़ने लगी। जूलिया की कला-प्रदर्शनी कई देशों में प्रदर्शित हुई। एक दिन वह सफल चित्रकार बनी। जूलिया की सफलता से उसके माता-पिता गौरवान्वित हो गये।

संस्कार सन्देश

माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देनी चाहिए।

लेखिका

रचना तिवारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० ढिमरपुरा पुनावलीकलां,
ब्लॉक- बबीना, झाँसी (उ०प्र०)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 13/11/2024
204
बाल कहानी

गलती

सूर्या नामक बालक अपने माता-पिता के साथ शहर में रहता था। सूर्या बहुत शैतान बालक था। हर समय वह नयी-नयी शैतानियाँ करता रहता था।
सूर्या का एक और शौक था। सूर्या हर समय किसी न किसी चीज में अपने-आप को बन्द कर लेता था। कभी वह थैले में बन्द हो जाता था। कभी वह बोरी में बन्द हो जाता था। ऐसा करके सूर्या को बहुत मजा आता था कि मैं इनमें से आसानी से निकल आऊँगा।

एक दिन सूर्या के घर के पास एक घर में किसी की भैंस टैंकर में बन्द होकर आयी। भैंस को टैंकर से उतार कर घर के मालिक भैंस को लेकर घर में घुस गये। सूर्य ने सोचा-, "भैंस को कितना अच्छा लगा होगा इसमें बन्द होकर! क्यों न मैं भी इसमें बैठ जाऊँ!" यह सोचकर सूर्या अन्दर बैठ गया। ड्राइवर टैंकर को लेकर चला गया।
जब ड्राइवर ने टैंकर को खड़ा किया और उसने से रोने की आवाज आयी। उसने टैंकर को खोलकर देखा तो सूर्या उसमें बन्द था। ड्राइवर ने सूर्या से पूछा-, "वह कहाँ से और कैसे इसके अन्दर बैठा?" तब सूर्या ने बताया कि-, "जहाँ पर उसने भैंस को उतारा था, वहीं से वह बैठ गया था।"
अब सूर्या रो रहा था और कह रहा था कि-, "मुझे वापस घर जाना है।" ड्राइवर ने कहा-, "घबराओ नहीं बेटा! मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़कर आऊँगा।" ड्राइवर ने तुरन्त ही सूर्या को आगे बैठाया और वापस उसको उसके घर छोड़ने गया। वहाँ पर पहुँचकर उसने देखा कि उसके माता-पिता सूर्या को ढूँढ रहे थे।
जैसे ही सूर्या के माता-पिता ने अपने बच्चे को देखा, तुरन्त उसको गले से लगा लिया और ड्राइवर को धन्यवाद दिया और पैसे देकर कहा कि-, "तुम अपना मेहनताना ले लो।"
ड्राइवर ने कहा कि-, "यह तो उसका फर्ज था।" ड्राइवर ने सूर्या से कहा-, "आज के बाद वादा करो कि कभी भी किसी भी चीज में बन्द नहीं होगे!" सूर्या के माता-पिता ने कहा-, "बेटा! ऐसी चीजों से हमेशा जान जाने का खतरा रहता है।" आगे से तुम कभी ऐसे काम मत करना।" सूर्या ने वादा किया कि-, "वह कभी ऐसा काम नहीं करेगा।" माता-पिता ने सूर्या को गले से लगा लिया और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

संस्कार सन्देश-
हमें कभी भी ऐसी चीज में खुद को बन्द नहीं करना चाहिए, जिसमें हम साँस ना ले सकें।

कहानीकार-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि०- रजवाना, ब्लॉक- सुल्तानगंज
जनपद- मैंनपुरी (उ०प्र०)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 12/11/2024
205

बाल कहानी

साइकिल

तीन मित्र थे, राजू, सोनू और पप्पू। तीनों में बड़ी गहरी मित्रता थी। छुट्टी का दिन था। तीनों ने एक योजना बनायी कि, "चलो, क्यों न हम लोग आज साइकिल की दौड़ करते हैं। जो सबसे आगे होगा, उसको इनाम मिलेगा।" सोनू की बात सुनकर राजू बोल उठा, "पर ईनाम देगा कौन?"

पप्पू और सोनू भी सोच में पड़ गये। बोले, "राजू! तुम सही कह रहे हो। जीतने वाले को ईनाम देगा कौन?" तभी सोनू के मन में एक विचार आया। वह झट से बोल उठा, "मेरे पास पाँच रुपए हैं। तुम दोनों के पास कितने रुपए है?"

इत्तेफाक से राजू और पप्पू के पास भी पाँच रुपए थे। तीनों ने पैसा इकट्ठा किया और शर्त लगायी कि, "जो जीता, उसके ये सारे पैसे अभी।" साइकिल का खेल शुरू ही हुआ था कि पास खड़ा मिंटू सब सुन रहा था। वह दौड़कर तीनों के घर गया और शिकायत की कि, "तीनों जुआ खेल रहे है पैसा लगाकर, वो भी साइकिल रेस में। फिर क्या था? तीनों के अभिभावकों ने आकर सच्चाई देखी और तीनों को समझाते हुए बोले, "बेटा! ये गलत है। जीत की खुशी में इन्हीं पैसे से कुछ खा लेते, पर शर्त लगाना, पैसा लगाना सही नहीं है।" पास खड़ा मिंटू बहुत उदास था। वह बोला, "आप सबको मैंने इतना बढ़ा-चढ़ाकर इन तीनों की शिकायत की। आप मारने, डाँटने, व सजा देने की बजाय समझा रहे हैं! ऐसा क्यो?"

तभी उनमें से एक अभिभावक बोला, "प्यारे बच्चे प्यार से समझ जाते हैं। उन्हें सजा देने की जरूरत नहीं पड़ती। तुम भी मेरे पुत्र समान हो। चुगली करने के बजाय गलत काम करने से रोकने का प्रयास किया करो।"

मिंटू ने माफी माँगी और बोला, "ठीक है। आज से मैं भी अच्छा बच्चा बनूँगा।"

सोनू, राजू और पप्पू को भी अपनी गलती का एहसास हुआ। सबने बारी-बारी माफ़ी माँगी और सब लोग अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

संस्कार सन्देश -

प्यारे बच्चे सदैव अपने अभिभावक का कहना मानते हैं। अगर भूल से कोई गलती हो जाए तो माफी माँग लेते हैं।

लेखक-
शमा परवीन (अनुदेशक)
पूर्व मा० वि० टिकोरा-मोड़
ब्लॉक- तजवापुर, बहराइच (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 13-11-2024
206

बाल कहानी — अनोखा सिक्का

एक राजा के दो पुत्रियाँ थीं। दोनों ही बहुत ही समझदार और होशियार तथा उतनी ही सुन्दर थीं। छोटी वाली पुत्री को अपनी सुन्दरता पर बहुत घमण्ड था। वह कहती थी कि, "मैं ज्यादा सुन्दर हूँ, इसलिए राजा जी यानी कि मेरे पिताजी मुझे ज्यादा प्यार करते हैं।" जबकि ऐसा नहीं था।

राजा को अपने दोनों ही बेटियाँ बहुत ही ज्यादा प्यारी थीं। वे दोनों से ही समान व्यवहार करते थे और अपने बेटे राजकुमार को भी उतना ही प्यार करते थे। जब भी कोई रक्षाबन्धन या भाई-दिवस का त्योहार आता तो वह राजकुमार से कोई न कोई कीमती चीज दोनों बेटियों को दिलवाते थे। इस बार के भाई-दूजके त्योहार पर राजकुमार ने अपनी दोनों बहनों को एक-एकसिक्का उपहार के तौर पर दिया, लेकिन छोटी वाली को बहुत खराब लगा। उसने उठाकर वह सिक्का सड़क में यानी की जमीन में फेंक दिया कि मेरे यह किस काम का? जैसे ही सिक्का जमीन पर गिरा, उसने से एक दुआ निकल और एक जिन निकल कर आया और उसने छोटी बेटी को श्राप देते हुए कहा, "तुमने मेरा अपमान किया है। अब मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि तुम दुनिया की सबसे बदसूरत शक्ल की लड़की बन जाओ।" राजकुमारी बहुत घबरायी और क्षमा माँगने लगी। कुछ समय पश्चात वह वहाँ से गायब हो गया। अब राजकुमारी ने जैसे ही शीशा देखा, वह एक काली-कलूटी बदसूरत-सी लड़की बन चुकी थी। वह बहुत रोई और अपनी बहन से बोली, "तुम मुझे कृपया फिर से पहले जैसा सुन्दर बना दो।" लेकिन बहन चाह कर भी कुछ नहीं कर सकी और तब वह जाकर के राजकुमार के पास गयी और उसे सारी बातें बतायीं तो राजकुमार ने तुरन्त जिन को बुलाया और डाँटते हुए बोला, "तुम मेरी बहन के साथ ऐसा कैसे कर सकते हो?" तो जिन बोला, "अब यह श्राप तो किसी न किसी को अपने ऊपर लेना पड़ेगा, क्योंकि जो श्राप मैंने एक बार दे दिया, उसे मैं वापस नहीं ले सकता।" राजकुमार ने कहा ठीक है, "तुम मुझे काला और बदसूरत कर दो, लेकिन मेरी बहन को पहले से भी कहीं ज्यादा सुन्दर और खूबसूरत कर दो।" जिन ने उसकी बात मान ली और ऐसा ही किया। अब जब राजकुमारी ने अपना शीशे में मुख देखा बहुत खुश हुई और अपने भाई से अपनी गलती की क्षमा माँगी। राजकुमार बोला, "कोई भी वस्तु या इन्सान हो, सभी मूल्यवान होते हैं। हमें उसका अपमान नहीं करना चाहिए।" राजकुमारी को बात समझ में आ गई और उसने अपनी गलती के लिए सबसे क्षमा माँगी।

संस्कार सन्देश

हमें कभी भी अहंकार के वशीभूत होकर किसी का अपमान नहीं करना चाहिए।

लेखिका

अंजनीअग्रवाल (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० सेमरुआ,
सरसौल (कानपुर नगर)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 14-11-2024
207

बाल कहानी

हिरन और चूहा

एक जंगल में एक हिरन रहता था। उसी जंगल में एक चूहा भी अपने बच्चों को लेकर वहाँ रहने के लिए आया। चूहे ने रहने के लिए एक बिल बनाया। चूहा और उसके बच्चे वहाँ पर अकेले थे। उनके साथ वहाँ पर खेलने के लिए तथा बातें करने के लिए कोई नहीं था।

एक दिन एक हिरन चरते-चरते उस जगह पर पहुँच गया, जहाँ पर चूहे का बिल था। वह थक गया था। आराम करने के लिए बिल के पास बैठा। थोड़ी देर में वहाँ चूहा आ गया। चूहे ने हिरन से पूछा, "तुम कहाँ से आये हो?" हिरन ने कहा, "मैं भी इसी जंगल में रहता हूँ। घास चरते-चरते यहाँ तक पहुँच गया हूँ।" हिरन और चूहा आपस में बातें कर रहे थे। चूहे के बच्चों ने भी उनकी बातें सुनी। चूँ-चूँ करते चूहे के बच्चे भी बिल से बाहर आ गये। हिरन ने उन्हें खूब प्यार किया।

चूहे के बच्चों ने हिरन से कहा, "यहाँ हमारा मन नहीं लग रहा है क्योंकि हमारे साथ यहाँ खेलने के लिए कोई नहीं है। दिन-भर हम बिल के अन्दर ही रहते हैं।" हिरन ने कहा, "तुम उदास मत होओ। मेरे भी दो बच्चे हैं। कल से मैं उन्हें यहाँ लेकर आऊँगा।" अगले दिन से रोज हिरन अपने दोनों बच्चों को चूहे के बिल के पास लेकर आया। चूहे के बच्चे हिरन के बच्चों को देखकर बहुत खुश हुए। वे चारों आपस में खेलने लगे और बहुत खुश रहने लगे। उस दिन से उनकी दोस्ती हो गयी।

संस्कार सन्देश

दोस्ती में हमें उन बातों को याद नहीं रखना चाहिए, जो दु:ख पहुँचाती हैं बल्कि हमें उन यादों को सजोना चाहिए, जो हमें खुशी और आनन्द देती हैं।

लेखिका
दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
वि० ख० कर्णप्रयाग, चमोली (उत्तराखण्ड)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -18.11.2024
208
बाल कहानी

आत्म शक्ति

"दादी, दादी!" राजू चिल्लाता हुआ घर में घुसा और दनदनाते हुए दादी के पास पहुँच गया। "अरे राजू! क्या हुआ, इतना अधीर क्यों है, स्कूल में कुछ हुआ क्या?" "हाँ, दादी!" नन्हा राजू चिल्लाया! "यह मुनिया.. राजू की बुआ की लड़की, जब देखो तब टीचर के सामने आगे-आगे कूदती-रहती है। मुझे टीचर की बात न तो ध्यान से सुनने देती है न समझने।" (मुनिया अब राजू के ही स्कूल में पढ़ने लगी है) दादी ने प्यार से राजू को अपने पास बिठाया और कहा, "पहले तुम अपनी यूनिफॉर्म सही जगह पर रखो! घर के कपड़े पहनो! स्कूल बैग और जूते अपनी जगह पर रखो! कुछ खाओ पियो, तब तक मुनिया भी आ जायेगी और तब मैं, तुम दोनों के झगड़े का निपटारा करूँगी।" "ओके दादी!" तब तक मुनिया भी नानी-नानी कहते हुए राजू की दादी से लिपट गयी। थोड़ी देर बाद दादी को असली बात पता चली। बात यह थी कि टीचर बच्चों को स्नो व्हाइट और सात बौने की कहानी सुना रही थी। मुनिया बीच-बीच में अपनी आपत्ति दर्ज करा रही थी, कि, "स्नो व्हाइट इतनी सीधी और भोली क्यों थी कि उसे बार-बार लोग अलग-अलग तरीकों से परेशान करते थे।" कहानी का अन्त तो उसे बिल्कुल पसन्द नहीं था कि दूर देश का एक सुन्दर राजकुमार आये। उसकी सहायता से वह एक सुखी जीवन जिये। क्या वह इतनी असहाय थी?" मुनिया की इन हरकतों से राजू कहानी का आनन्द उठा नहीं पा रहा था। दादी ने थोड़ी देर तक सोचा और समस्या का हल पाकर उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने कहा, "अभी तुम दोनों थोड़ा-सा विश्राम कर अपना-अपना होमवर्क कर लो। रात में भोजन के उपरान्त स्नो वाइट की कहानी वह सुनायेगी।" दोनों बच्चे खुशी से उछल पड़े। भोजन के उपरान्त दोनों दादी के पास आ धमके। दादी ने उन्हें अपने अगल-बगल लिटा लिया और कहानी शुरू की, "सुन्दर नगर के राजा की एक बहुत सुन्दर बेटी थी स्नो व्हाइट। स्नो वाइट की एक सौतेली माँ थी, जो उसकी सुन्दरता से बहुत ईर्ष्या करती थी। रानी को कुछ जादुई ताकतें भी प्राप्त थी। जैसे- उसके पास एक जादुई शीशा था, जो उसके प्रश्नों का उत्तर देता था। साथ ही स्थान विशेष को भी दर्शाता था। बिल्कुल गूगल मैप की तरह। मुनिया बोली, "हाँ.. हाँ..।" दादी हँसकर बोली, "रानी ने एक दिन शीशे से पूछा, "इस दुनिया में सबसे सुन्दर कौन है?" शीशे ने तुरन्त उत्तर दिया, "स्नो व्हाइट रानी को बहुत बुरा लगा। उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि, "इस राजकुमारी को दूर जंगल में ले जाकर इसकी हत्या कर दो!" सैनिक स्नो व्हाइट को जंगल में ले तो गये, पर उन्होंने उसकी हत्या नहीं की तथा जाकर रानी को बता दिया कि उसे जंगली जानवर खा गये। रानी प्रसन्न हो गयी। इधर स्नो वाइट का रो-रोकर बुरा हाल था। तभी उसे दूर प्रकाश की एक किरण दिखाई दी। उसने देखा कि एक बहुत छोटा सा सुन्दर घर था। वह डरते-डरते भीतर गयी तो वहाँ उसने सात बौने को देखा! बौने ने उसकी कहानी सुनी। उसे आश्रय दिया, तब तक मुनिया कूद पड़ी।" "हाँ! बार-बार उसकी सौतेली माँ ने उस पर आक्रमण किया और वह बार-बार बुद्धू बनती रही। यहाँ तक कि उसके प्राण भी लगभग निकल गए थे राजकुमार के सामने।" दादी ने कहा, "अरे नहीं.. नहीं.. ताकतवर स्नो वाइट की कहानी सुनो! स्नो व्हाइट ने बौने से कहा कि, "कल से वह भी उसके साथ शिकार पर जायेगी और अपनी निशानेबाजी को मजबूत करेगी, फिर एक दिन वह सारी बातें राजा के समक्ष रखेगी।

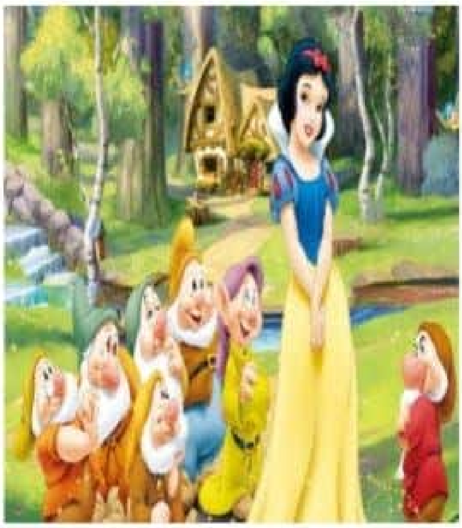

दिन बीतते रहे। रानी को जब एक बार फिर जादुई शीशे से पुराना उत्तर ही मिला तो उसने क्रोध आवेश में जंगल जाकर स्नो व्हाइट को ठगना चाहा, पर इस बार स्नो व्हाइट सतर्क व सावधान थी। उसने रानी को पहचान कर उसे पर अपना धनुष तान दिया। रानी किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर लौटी। इसी जंगल में रहने वाले आदिवासियों को भी स्नो व्हाइट ने विकसित दुनिया से परिचय कराने की ठान ली। वह खाली समय में उनके बच्चों को शिक्षा देती थी। उन्हें आधुनिक तौर-तरीकों से परिचित कराती थी। धीरे-धीरे असहाय स्नो व्हाइट की बहादुर एवं प्रगतिशील युवती के रूप में ख्याति फैलने लगी। उसने वहाँ आदिवासियों की सहायता से एक छोटा सा स्कूल खोल लिया, जहाँ बच्चों को जीवन उपयोगी सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। इधर राजा ने जब जंगल की एक युवती की ख्याति सुनी तो उन्होंने उसे मिलने की योजना बनायी क्योंकि उन्हें तो पता था कि उनकी बेटी को जंगली जानवर खा गये। राजा जब स्नो वाइट की सौतेली माँ के साथ जंगल पहुँचे तो उन्हें पूरा जंगल ही बदला हुआ लगा! वहाँ एक स्कूल खुल चुका था। छोटी सी आवासीय व्यवस्था थी और जरूरत की चीजों के लिए एक छोटा-सा बाजार भी। राजा चकित रह गया! जब वह इन सबके लिए उत्तरदायी स्नो व्हाइट से मिला तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अपनी पुत्री को इस रूप में जीवित देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ। स्नो व्हाइट ने अपनी सारी कहानी अपने पिता को सुनायी तथा अत्याचारी रानी के लिए उचित दण्ड की भी माँग की। राजा ने न्याय करते हुए रानी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया। जंगल में स्नो वाइट की ख्याति सुनकर पड़ोसी राज्य का राजकुमार भी आया था। उसने राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव किया, पर राजकुमारी ने विनम्रता से मना करते हुए आजीवन आदिवासियों की सहायता का व्रत ले लिया। कहानी के नये रूप से मुनिया बहुत खुश हुई। राजू भी खुश था। नानी ने बच्चों को प्यार से लिपटाकर सोने का आग्रह किया।

संस्कार सन्देश

आत्मिक शक्ति से बड़े बड़े सकारात्मक बदलाव सम्भव हैं।

लेखिका

डॉ० सीमा द्विवेदी (स०अ०)
कंपोजिट स्कूल कमरौली
जगदीशपुर (अमेठी)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 19/11/2024
209

बाल कहानी

फूलवती का बगीचा

एक गाँव में एक किसान परिवार निवास करता था। उस परिवार में हरिराम और उसकी पत्नी सुमेधा और उनका पुत्र अभिषेक और पुत्री फूलवती रहते थे। फूलवती घर में सबसे छोटी और नटखट थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा के लिए गाँव के विद्यालय में दाखिला हो गया। उस विद्यालय में आवश्यक सभी व्यवस्थाएँ थीं। वह नियमित विद्यालय जाती और अपनी पढ़ाई करती। उस विद्यालय में एक तरफ सब्जी और फल उगाए जाते थे।

फूलवती ने उत्सुकता से अपनी क्लास के शिक्षक से किचिन गार्डन के बारे में पूछा! तब उन्होंने फूलवती को किचिन गार्डन के लाभ और विकसित करने का तरीका भी समझाया। फूलवती ने उसी समय सोच लिया था कि वह भी अब अपने खेत में किचिन गार्डन बनायेगी। उसने घर आकर इसके बारे में अपने पिताजी को बताया। पिताजी ने कहा, "अपने पास खेत है और पानी भी है।"
फिर फूलवती ने अपने घर पर किचिन गार्डन विकसित किया, जिसमें मिर्ची, टमाटर, भिंडी, लौकी, तोरई, कद्दू, अमरूद और भी अलग-अलग सब्जी और फलों के वृक्ष लगाये।
एक दिन फूलवती अपने किचिन गार्डन से सब्जी तोड़कर अपने विद्यालय में ले गयी। उससे स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने पूछा तो फूलवती ने बताया कि, "हमारी कक्षा के कक्षाध्यापक जी ने किचिन गार्डन के बारे में बताया। उसी से मैंने सीखकर अपने घर में पिताजी की मदद से किचिन गार्डन बनाया। उसी में से सब्जी लेकर आयी हूँ।"
प्रधानाध्यापक बहुत खुश हुए और उन्होंने किचिन गार्डन के बारे में स्कूल में सभी बच्चों को बताया, जिससे सभी बच्चे प्रेरित हुए। ज्यादातर बच्चे अपने-अपने घर सब्जी और फलों के पौधे उगाने लगे।

संस्कार सन्देश-

प्रत्यक्ष अनुभव हमारे जीवन में शिक्षा को स्थायित्व प्रदान करते हैं।

कहानीकार-
धर्मेंद्र शर्मा (स०अ०)
कन्या० प्रा० वि० टोडी-फतेहपुर
गुरसरांय, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 20/11/2024
210

बाल कहानी — अनमोल पेड़-पौधे

राहुल अपने माता-पिता के साथ शहर में रहता था। गर्मी की छुट्टी बिताने अपने गाँव में दादा-दादी के पास आया था।
बस स्टॉप से दादाजी का घर काफी दूरी पर था। गर्मियों का मौसम था। धूप बहुत तेज थी। सभी की हालत खराब हो रही थी। आस-पास कोई छायादार वृक्ष भी नहीं था। आधा घण्टे इन्तजार करने के बाद बड़ी मुश्किल से एक रिक्शा मिला, फिर सभी घर पर पहुँच गये। दादा-दादी ने सभी का खूब स्वागत किया। ढेर सारी बातें हुईं। रात्रि भोजन के बाद सभी सोने चले गये। राहुल दादा और दादी के पास ही सोया।

सुबह जब राहुल की आँख खुली तो उसने देखा कि दादाजी टहलने जा रहे हैं। उनके हाथ में एक बड़ा सा झोला था। राहुल बोला, "दादाजी! मैं भी आपके साथ चलूँगा।"
"ठीक है बेटा! तुम भी मेरे साथ चलो।" दादाजी ने स्वीकृति दे दी। राहुल अचरज भरी दृष्टि से झोले की तरफ देख रहा, तभी कुछ दूर चलने के बाद दादाजी थैले से पेड़ निकाल कर वहाँ लगाने लगते हैं।
राहुल पूछता है कि, "दादाजी! आप यह क्या कर रहे हैं?" दादा जी मुस्कुराकर कहते हैं, "पर्यावरण की सुरक्षा।"
राहुल ने पूछा, "क्या मतलब दादाजी? मुझे समझ में नहीं आया, आप क्या कह रहे हैं? दादाजी कहते हैं, "बेटा! पेड़-पौधे हमारे लिए बहुत अनमोल होते हैं। यह प्रकृति के नि:शुल्क उपहार हैं।"
राहुल बोला, "पर कैसे दादाजी?" "तुम अभी नहीं समझोगे, पर एक दिन जरूर समझोगे। हमारे गाँव में अभी सड़कें बनायी गयी हैं, जिस कारण तमाम हरे पेड़-पौधों को काटा गया है।" यह कहकर दादाजी सारे रास्ते में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर नीम, आम, जामुन आदि के पेड़ लगाते हैं। राहुल भी उनकी मदद करता है।
गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म हो जाती हैं। राहुल वापस अपने माता-पिता के साथ शहर चला जाता है और पाँच वर्ष बाद वह फिर गाँव वापस लौट कर आता है। जैसे ही बस से उतरता है, वह देखता है कि गाँव में चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी।
गर्मी होते हुए भी हरे पेड़-पौधों की हरियाली के कारण ठण्डी हवा चल रही थी। वृक्षों पर फल लगे हुए थे। गाँव के बहुत से लोग पेड़ों के नीचे छाया में बैठे हुए थे। हरा-भरा सुन्दर दृश्य मन को मोह रहा था। दादाजी द्वारा लगाए गए छोटे पौधे विशाल वृक्ष का रूप ले चुके थे।
राहुल जब घर पहुँचा तो दादा-दादी से मिलकर बहुत खुश हुआ और तुरन्त ही बोला, "दादाजी! मुझे आपकी बात का उत्तर मिल गया। पेड़-पौधे अनमोल होते हैं। पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं और हमें प्राण वायु देते हैं।" दादाजी कहते हैं, "हाँ बेटा! पेड़-पौधे हमारे लिए प्रकृति का नि:शुल्क उपहार हैं। हमें अपने जीवन और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाने चाहिए।" यह सुनकर राहुल बहुत खुश हुआ।

संस्कार सन्देश-

पेड़-पौधे अनमोल होते हैं। हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए और हरे पेड़ों को काटना नहीं चाहिए।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)

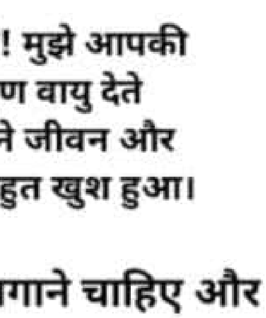

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 21-11-2024
211

बाल कहानी

नटखट लक्ष्मी

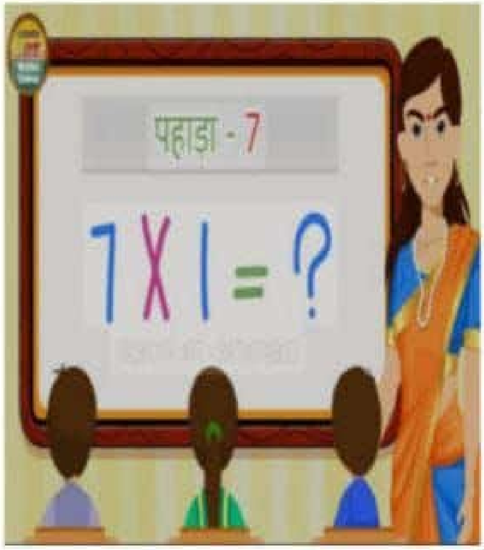

लक्ष्मी कक्षा दो की छात्रा थी। वह बहुत ही नटखट और बातूनी लड़की थी। वह रोज विद्यालय जाती और मन लगाकर पढ़ती। उसके अध्यापिका उसको जो भी काम देती, वह झटपट कर लेती। एक बार उसके अध्यापिका ने उसको सात का पहाड़ा सुनाने को कहा। वह तुरन्त पहाड़ा सुनाने लगी-

फात के फात.....
फात दूनी चौदह....
फात तिया इक्कीस...
फात चौक अट्ठाइस.
फात पंचे पैंतीस....

पहाड़े सुनाने में मगन, उसको पता ही नहीं चला कि वह सात को फात बोलती है। पूरी कक्षा जब उस पर हँसने लगी, तब उसको समझ आया। लेकिन बहुत कोशिश के बाद भी वह सात को फात ही बोल रही थी।

अपना मजाक उड़ाए जाने के डर से अब वह कक्षा में शान्त रहने लगी। कुछ भी सुनाने में संकोच करती।

अध्यापिका को ये देखकर बहुत बुरा लगा। तत्पश्चात उन्होंने योजना बनायी कि वह लक्ष्मी की ध्वनि-विकार को दूर करेगी।

उन्होंने लक्ष्मी को अलग से रेमेडियल क्लास दी। उसको पहले रेत पर 'स' वर्ण लिखवाया, फिर उसका बार-बार उच्चारण कराया। फ्लैश-कार्ड पर 'स' वर्ण की पहचान करायी और अपने साथ कहानी दोहराने को कहा।

कुछ ही दिनों में अध्यापिका और लक्ष्मी की मेहनत रंग लायी और वह एक बार फिर से कक्षा में मन लगाने लगी। अब बिना किसी झिझक और डर के वह पहाड़े सुनाती थी।

संस्कार सन्देश- हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। मेहनत और लगन से हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

कहानीकार
रूखसार परवीन (स०अ०)
संविलयन विद्यालय गजपतिपुर,
बहराइच (उ०प्र०)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -22.11.2024
212

बाल कहानी

मीनू और बीनू

मीनू और बीनू घर पर पढ़ाई कर रही थी। बीनू ने मीनू से एक प्रश्न पूछा, "ये बताओ, ये क्या लिखा है?" बीनू ने बहुत गुस्से में कहा, "मुझे नहीं पता, ये क्या लिखा है? मैं तुम्हारी टीचर नही हूँ।" जब मीनू और बीनू आपस में झगड़ने लगी। माँ रसोई घर से जल्दी से दौड़ कर आयी और आते ही बोली, "अरे! क्या हुआ, क्यों लड़ रही हो? अभी तो मैं देख कर गयी थी, तुम आपस में बैठकर पढ़ाई कर रही थी। मैं रसोई घर में तुम दोनों की पसन्द का भोजन बना रही हूँ।" दोनों ने माँ को पूरी बात बतायी। माँ ने बीनू को समझाते हुए कहा, "बेटा! मीनू तुम से बड़ी है। वह तुम्हारी दीदी है। दीदी से ऊँची आवाज में बात नहीं करते।"

फिर माँ ने मीनू को समझाया, "बीनू छोटी है। तुम उसे प्यार से समझाया करो। डाँटा न करो और अगर फिर भी न समझे तो मुझसे आकर कहो। छोटी-छोटी बात पर गुस्सा होना सही नहीं है। समस्या का हल लड़ाई नहीं बल्कि धैर्य और समझदारी है। तुम दोनों मेरी प्यारी बेटियाँ हो। अब ऐसी गलती दोबारा मत करना?" दोनों बच्चियों को माँ की बात समझ आ गयी। मीनू और बीनू ने एक दूसरे से माफी माँगी। माँ से भी माफ़ी माँगी और कहा कि, "अब वे कभी गुस्सा, बहस, लड़ाई नहीं करेगी। हर बात पहले माँ को बतायेगी।" माँ ने दोनों बच्चियों को गले लगा लिया। पुनः दोनों को पढ़ाई करने को कहा और स्वयं भोजन बनाने रसोई घर चली गयी। कुछ देर बाद स्वादिष्ट भोजन लेकर माँ आयी और बोली, "आओ, हम सब साथ में भोजन करते हैं।" मीनू और बीनू पसंदीदा भोजन की महक से ही खुश हो गयीं। फिर सबने मिलकर भोजन किया।

संस्कार सन्देश

गुस्सा किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। हमें हर हाल में धैर्य रखना चाहिए।

लेखिका

शमा परवीन

बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -23.11.2024
213

बाल कहानी

घोर लापरवाही

नेहा छः वर्ष की थी। नेहा गाँव की प्राथमिक पाठशाला में कक्षा एक की छात्रा थी। नेहा के मामा बिजनौर में रहते थे। उनके घर में विवाह समारोह था। नेहा अपनी माता-पिता के साथ में बिजनौर में शादी समारोह में गयी थी। गाँव में खुले में टेंट लगाया गया था। रात में सभी लोग दावत खा रहे थे। तेज आवाज में डीजे बज रहा था। नेहा के माता-पिता कार्यक्रम में व्यस्त हो गये। नेहा इधर-उधर खेल रही थी। कुछ समय बाद नेहा के पिता को नेहा का ध्यान आया और उन्होंने कहा, "नेहा कहाँ है?" चारों तरफ देखा, मगर नेहा नहीं थी। तभी वहाँ पर खेल रहे एक बालक ने बताया कि, "एक व्यक्ति नेहा को बाहर लेकर गया है।"

नेहा के पिता तेजी से और लोगों को साथ लेकर बाहर के रास्ते पर ढूँढने लगे तो, उन्हें नेहा के रोने की आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि, एक व्यक्ति नेहा को एक खण्डहर की तरफ ले जा रहा था। सभी गाँव वाले लोगों ने भागकर उसे आदमी को पकड़ लिया और उसको बहुत मारा। पूछने पर उसने बताया कि, "वह उसे गलत कार्य के उद्देश्य से ले जा रहा था। उसने चॉकलेट का लालच देकर नेहा को अपने साथ चलने को राजी किया था।" नेहा अपने पापा को देखकर उनसे लिपट गयी। वह सहमी हुई थी। सभी लोग कह रहे थे कि, "बेटी बच गयी।" नेहा के पापा ने सोच रहे थे कि, "उन्होंने अपनी बेटी को अपनी आँखों से दूर क्यों किया? अगर कुछ हो जाता तो क्या होता?" यह सोचकर उनकी आँखों से आँसू आ गये। आगे से उन्होंने प्रण किया कि वह कभी भी अपनी बेटी को कहीं भी अकेला नहीं छोड़ेंगे और अपनी बेटी को लेकर वापस समारोह में चले गये।

संस्कार सन्देश

किसी की दशा में अपने बच्चों को अपनी आँखों से दूर न करें। इस मामले में हमें किसी का भी विश्वास नहीं करना चाहिए।"

कहानीकार-
शालिनी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय- रजवाना
सुल्तानगंज मैंनपुरी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 25/11/2024
214

बाल कहानी
नानी और पिन्टू

"आज बहुत दिनों बाद नानी के घर जा रहा हूँ। नानी देखते ही गले से लगा लेगी। खूब आशीर्वाद देगी और खूब खिलायेगी। पिछली बार याद है, नानी ने कचोरी, पकौड़ी, चॉकलेट, बर्फी और बहुत से चीजें दी थी।"
"बेटा! तुम क्या बुदबुदा रहे हो? कहाँ जाओगे? इसके आगे मेरा रिक्शा नहीं जायेगा। रास्ता बहुत खराब है।"
"बाबा! थोड़ा आगे ले चलो मेरी नानी के घर तक। पिछली बार अम्मी-पापा के साथ गाड़ी पर आया था, तब तो नानी के घर तक गया था, आप यही रोक रहे हो.. मैं पैदल कैसे जाऊँगा?"
बाबा चिल्लाते हुए बोले, "ये मेरा रिक्शा है, कोई गाड़ी नहीं है। सोनपुर गाँव तुमने बताया था। यही है सोनपुर गाँव...अब तुम रिक्शे से उतरो।" पिंटू रिक्शे से उतर गया और नानी के घर की तरफ तेजी से जाने लगा। बाबा ने पिंटू को आवाज लगायी, "रुको बेटा! पैसे तो दो.. कहाँ भागे जा रहे हो?"
पिंटू ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया, "बाबा मेरे पास पैसे नहीं है।"
"पैसे नहीं है, तो तुम मेरे रिक्शे पर बैठे क्यूँ?"
"पिछली बार मैं पापा के साथ आया था तो पापा ने पैसे नहीं लिए थे।"
पिंटू की बात सुनकर बाबा ने खूब डाँट लगायी। पिंटू उदास हो गया। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है? वो नानी के घर की तरफ बढ़ा।
जैसे ही उसने नानी के घर का दरवाजा खटखटाया तो नानी आ गयी। दरवाज़ा खोलते ही पिंटू से पूछताछ करने लगी, "पिंटू तुम यहाँ कैसे और कौन आया है साथ में? क्या तुम अकेले आये हो, ये बस्ता और स्कूल ड्रेस में! क्या तुम स्कूल नहीं गये या स्कूल से भाग आये हो? बोलो पिंटू जवाब दो!"
क्या नानी! आपने गले से लगाये बिना सवाल पूछना जारी कर दिया? मैं आपसे मिलने आया हूँ। मैंने सोचा था कि आप मुझे देखकर खूब खुश होंगी..मुझे खूब दुलार करेंगी, पर आप तो बिल्कुल बदल गयीं।"
"पिंटू तुम अकेले क्यों आये और कैसे आये?"
"मैं क्या करता नानी! आज सुबह ही अम्मी-पापा से कहा कि नानी के यहाँ चलो तो वे बोले, "पहले स्कूल जाओ.. छुट्टियों में चलेंगे।" मुझे खूब डाँट पड़ी। रिक्शे से आया तो बाबा पैसे माँगने लगे। मेरे पास थे ही नहीं तो कैसे देता? रिक्शे वाले बाबा ने भी खूब डाँटा और अब आप भी डाँट रही हो?" इतना कहकर पिंटू रोने लगा।
नानी ने पिंटू को प्यार से समझाया, "बेटा! तुमने गलती की है। हमेशा समय का सदुपयोग करना चाहिए था। ये समय तुम्हारे स्कूल जाने का है। चलो, अभी ज्यादा देर नहीं हुई है। तुम्हें स्कूल छोड़ आती हूँ।" इतना कहकर नानी पिंटू को स्कूल की ओर ले जाने लगी। पिंटू को बहुत बुरा लगा, पर रास्ते में नानी ने स्कूल की अहमियत के बारे में खूब समझाया तो पिंटू को अपनी गलती का एहसास हुआ। वह खुशी-खुशी स्कूल की ओर चल दिया।

संस्कार सन्देश-

हमें सबसे पहले नित्य जरुरी दैनिक कार्य पर ध्यान अधिक देना चाहिए।

कहानीकार-
शमा परवीन (अनुदेशक)
पूर्व मा० वि० टिकोरा-मोड़
ब्लॉक- तजवापुर, बहराइच (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 26/11/2024
215

बाल कहानी

संगति का असर

जीतू और राघव दोनों पक्के मित्र थे। दोनों साथ-साथ स्कूल जाते और साथ-साथ ही खेलते थे। जीतू पढ़ने मे बहुत होशियार था। वह हमेशा कक्षा में प्रथम आता था। वहीं राघव पढ़ाई में कमजोर था, लेकिन अब राघव भी जीतू के साथ मिलकर पढ़ाई करने लगा और कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने लगा। समय बीतता गया। यही क्रम चलता रहा। अब दोनों कक्षा आठ में आ गये।

एक दिन राघव ने स्कूल में बच्चों को बातें करते हुए सुना। वे आपस में जीतू की तारीफ कर रहे थे। उनकी बातें सुनकर राघव के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। अब वह जीतू से दूर रहने लगा और कक्षा के सबसे खराब बच्चों की संगति में आ गया, जिसके कारण उसमें अनेक बुरी आदतें आ गयीं। उधर परीक्षा का समय भी आ गया। सभी ने परीक्षाएँ दीं। जब रिजल्ट आया तो परिणाम कुछ और ही था। जहाँ जीतू प्रथम स्थान पर तो राघव परीक्षा में कक्षा में सबसे नीचे स्थान पर था। परीक्षा का परिणाम देखकर राहुल बहुत दु:खी हुआ। जब वह घर पहुँचा तो उसे दु:खी देखकर उसकी दादी ने उसे समझाया कि, "बेटा! हम जिस तरह के लोगों की संगति करते हैं, हम भी धीरे-धीरे वैसे ही बनने लगते हैं।

तुम जब जीतू के साथ रहते थे, तब तुम कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करते थे। आज खराब बच्चों की संगति के कारण तुम्हारे कक्षा में सबसे कम नंबर आये हैं, इसलिए बेटा तुम्हें अच्छी संगति में रहना चाहिए।" राघव को दादी की बात समझ आ गयी थी। उसने अपनी दादी माँ से वादा किया कि, "अब से वह कभी खराब बच्चों की संगति में नहीं रहेगा।" यह सुनकर दादी माँ बहुत प्रसन्न हुई।

संस्कार सन्देश-

हमें सदैव अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए। खराब लोगों की संगति में हमारी उन्नति रुक जाती है और हम दुर्गुणों से भर जाते हैं।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)

...ansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 27-11-2024
216

बाल कहानी — फहद

फहद अपनी कक्षा का सबसे होनहार छात्र था। उसका घर विद्यालय से लगभग पाँच किलोमीटर दूर था। फिर भी वह पैदल चलकर प्रतिदिन विद्यालय जाता था। फहद की यूनिफॉर्म हमेशा साफ-सुथरी होती थी। इतनी कम उम्र में अपने अच्छे आचरण के कारण वह सबकी आँखों का तारा बन गया था।

एक बार फहद की तबियत अचानक खराब हो गयी। उसको बहुत तेज बुखार था और उल्टी-दस्त हो रहा था। उसके माँ-बाप उसको पास के किसी झोला-छाप डॉक्टर के पास ले गये। झोला-छाप डॉक्टर ने फहद को दवा दी और इन्जेक्शन भी लगाया, लेकिन उसको कोई लाभ नहीं हो रहा था। दिन-प्रतिदिन उसकी तबियत बिगड़ती ही जा रही थी। फहद इतना कमजोर हो गया था कि बिस्तर से उठना भी मुश्किल हो गया था।

अब कई दिनों से फहद विद्यालय भी नहीं जा पा रहा था। उसकी अध्यापिका को उसकी चिन्ता हुई। अभिभावक से सम्पर्क करने पर पता चला कि फहद का इलाज कोई झोला-छाप डॉक्टर कर रहा है। वह बहुत नाराज हुई। वह फौरन फहद को जिला अस्पताल ले गयी और उसका इलाज कराया ।

जाँच करने पर पता चला कि उसको लिवर में इन्फेक्शन है। अगर कुछ दिन और उसका इलाज न होता तो उसकी जान को खतरा हो सकता था। सही इलाज मिलने से फहद स्वस्थ हो गया। अब वह फिर से प्रतिदिन विद्यालय पढ़ने जाने लगा।

संस्कार सन्देश

हमें बीमार पड़ने पर अपना इलाज किसी प्रशिक्षित डॉक्टर से कराना चाहिए न कि किसी झोला-छाप डॉक्टर से।

लेखिका
रूखसार परवीन (स०अ०)
संविलयन विद्यालय गजपतिपुर,
बहराइच (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 28-11-2024
217

बाल कहानी

काबिलियत

राधा और आकांक्षा बचपन की सहेली हैं। दोनों ने बचपन से लेकर आठवीं तक की शिक्षा पास के सरकारी स्कूल से प्राप्त की। आज दोनों ने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी और दोनों चहकते हुए घर जा रही थीं। राधा के पिता रामू एक गरीब किसान और आकांक्षा के पिता हीरालाल गाँव के सरपंच थे। दोनों बेटियों ने पास के राजकीय विद्यालय में आगे पढ़ने का मन बनाया है, परन्तु राधा के पिता ने गरीबी का हवाला देते हुए अपनी बिटिया को आगे पढ़ाने से मना कर दिया।

एक दिन आकांक्षा विद्यालय जा रही थी। तभी उसकी नजर राधा पर पड़ती है। वह राधा से आगे न पढ़ने का कारण पूछती है। राधा अपनी पिता की गरीबी का हवाला देकर चुप हो जाती है।

शाम हो जाती है। गरीब रामू खेत से वापस लौटा ही था कि राधा के रोने की आवाज उसके कानों में सुनायी देती है। बड़े प्यार से वह बिटिया के रोने का कारण पूछता है। आखिरकार बिटिया के आगे पढ़ने की इच्छा को वह सहर्ष स्वीकार करता है और दिन-रात मेहनत करने लगता है। उसकी बेटी राधा भी अपने पिता को निराश नहीं करती है। वह भी पूरी ईमानदारी से पढ़ाई करती रहती है। हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट में अव्वल आने के बाद राधा यहीं ही नहीं रुकती बल्कि डॉक्टरी की परीक्षा भी उत्तीर्ण करती है।

जब यह खबर गाँव में पहुँचती है तो गरीब रामू खुशी से फूले नहीं समाया। सबसे यही कहते फिर रहा है कि, "बेटी की काबिलियत बेटों से कम नहीं है। बेटे के साथ-साथ बेटियों को भी पढ़ा-लिखाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाइये।

संस्कार सन्देश

पुत्र और पुत्री की शिक्षा में भेद न करें। बेटियों को भी अच्छी देकर उनका मान बढ़ायें।

लेखक

दीपक कुमार यादव (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय मासाडीह,
महसी, बहराइच (उ०प्र०)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 29-11-2024
218

बाल कहानी — किस्मत का खेल

रामू एक गरीब किसान था। उसके दो बेटे और दो बेटी थीं। चारों बच्चे गाँव के स्कूल में ही पढ़ने जाते थे। वह चारों बहुत होशियार और चालक भी थे। उनको अपने घर की स्थिति मालूम थी, इसलिए वह जरा-सा भी उधम नहीं मचाते। स्कूल आने के बाद पढ़ने लग जाते और काम में अपने माँ-बाप का हाथ बताते थे।

एक दिन रामू बड़ा परेशान था क्योंकि उसके पास कुछ भी धन नहीं था। कोई भी उसकी सहायता करने को तैयार भी नहीं था। आज के जमाने में गरीब का सहारा बहुत कम लोग बनते हैं। रामू ने सोचा, "क्यों न खेत में कुछ वह किया जाए, कि फसल अच्छी हो जाये, लेकिन उसके पास इतना पैसा नहीं है कि वह ट्रैक्टर से खेत को जोत ले।" इसलिए उसने अपना पावड़ा उठाया और मिट्टी खोदने लगा। मिट्टी खोदते-खोदते शाम हो गयी। कुछ देर बाद जैसे ही उसने पावड़ा मिट्टी में मारा। उसको कुछ आवाज आयी। उसने फिर दोबारा मारा तो आवाज आयी। उसने जल्दी से देखा तो वहाँ एक घड़ा था। उसने उसको खोलकर देखा तो उसमें सोने के सिक्के थे। रामू ने चारों तरफ देखा, कोई दिखाई नहीं दिया तो उनको अपने घर ले आया। अपनी पत्नी और बच्चों को बुलाकर बताया कि, "अब हमारी परेशानी दूर हो जायेगी। यह हमारे खेत में मिला है।" सभी देखकर बहुत खुश हुए। उसने कहा, "किसी से कहना मत!" तो बच्चों ने भी 'हाँ' कर दी।

एक दिन बच्चे पड़ोस के बच्चों के साथ खेल रहे थे। उन बच्चों में एक पड़ोसी बच्चा सोनू जो बहुत मालदार था। वह भी खेलता था, लेकिन वह रोज इन सब का मजाक उड़ाता और नयी-नयी चीजें लाकर दिखाता था। रामू के छोटे बेटे को अच्छा यह नहीं लगता था। एक दिन सभी बच्चे खेल रहे थे। सोनू आया और दो रुपये वाले डिब्बे को उठाकर लाया और कहा, कि "मेरे पास बहुत सारे रुपये हैं।" तब रामू का छोटा बेटा घर के अन्दर गया और एक सोने का रुपया लेकर आया और बोला कि, "आपके पास तो लोहे का रुपया है। मेरे पास तो यह पीले रंग का है।" उसको देखकर सब दंग रह गये क्योंकि यह तो सोने का रुपया था। फिर क्या था? सोनू ने सारे गाँव वालों को बुला लिया कि, "रामू काका ने चोरी की है!" तब रामू ने सारी घटना मुखिया जी को बतायी। मुखिया जी ने कहा, "माना कि तुम्हारे खेत में यह घड़ा मिला है, लेकिन आज के जमाने में जमीन से निकला धन सरकार का होता है इसलिए आप इसे पुलिस को दे दें।" रामू बेचारा बहुत सीधा था। उसने कहा, "अभी लाता हूँ।" वह घर के अन्दर गया और घड़ा लाकर मुखिया जी को दे दिया। मुखिया जी ने पुलिस को दे दिया। जब पुलिस थाने पहुँची तो वहाँ के बड़े ऐसो साहब के पूछने पर पुलिस वालों ने सारी बात बतायी। तब ऐसो साहब ने कहा, "यह आप लोगों ने गलत किया है। रामू बेचारा गरीब आदमी है। अपने परिवार का बड़ी मुश्किल से पालन करता है, इसलिए यह वापस देकर आओ, रुको, मैं भी आपके साथ चलता हूँ।" ऐसा कहकर वह रामू के घर पहुँचे। पुलिस वालों को देखकर सभी गाँव वाले आ गये। तब ऐसो साहब ने मुखिया जी के सामने रामू को घड़ा वापस किया और कहा कि, "यह आपकी मेहनत का फल है। आपकी किस्मत में यह धन लिखा है इसलिए इस पर आपका ही हक है।" रामू बहुत खुश हुआ और भगवान को 'धन्यवाद' दिया। यह देखकर सोनू को बहुत शर्मिन्दगी महसूस हुई और उसने रामू से माफी माँगी और कहा, "अंकल! मुझे माफ कर दो। मैं अमीर हूँ इसलिए सभी का मजाक उड़ाता था, लेकिन आज मुझे समझ आ गयी, कि किस्मत कभी भी पलट सकती है।" तब रामू ने सोनू से कहा, "कोई बात नहीं बेटा! तुम मिलकर एक साथ खेलो।" सभी खुश होकर अपने घर चले गये। रामू भी अपने परिवार के साथ खुशी-खुशी रहने लगा। उसने कुछ धन-मुखिया जी को दे दिया और कहा कि, "इस धन से हमारे गाँव में एक स्कूल बनवा दिया जाये और गरीबों की सहायता कर दी जाये, ताकि हमारा गाँव खुशहाली से भरपूर हो जाये।" इतना सुनकर सभी रामू की तारीफ करने लगे। आज रामू और रामू का गाँव खुशहाली से भरपूर है।

संस्कार सन्देश-

हमें किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए क्योंकि किस्मत सभी के साथ चलती है।

कहानीकार

पुष्पा शर्मा (शि०मि०)

पी० एस० राजीपुर, अकराबाद

अलीगढ़ (उ०प्र०)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com

https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 30-11-2024
219

बाल कहानी — हुनर का महत्व

एक गाँव में एक किसान रहता था। उस किसान के तीन पुत्र थे। तीनों ही बहुत होशियार और होनहार बच्चे थे, लेकिन तीनों ही बच्चों को अलग-अलग क्षेत्रों में रुचि थी, जिसके कारण तीनों बच्चों में आपसी तालमेल कम बैठता था। ऐसा नहीं था कि उन भाइयों में आपस में प्यार नहीं था। तीनों ही भाई एक-दूसरे पर जान छिड़कते थे। जो बड़ा भाई था, वह पढ़ाई में बहुत होशियार था। उसका मन पढ़ाई में बहुत ज्यादा लगता था। वह गणित में बहुत ही ज्यादा अच्छे नंबर लाया करता था। दूसरी तरफ दूसरा भाई जो था, उसे पढ़ाई पर उतनी रुचि नहीं थी, जितनी उसकी रुचि खेल में हुआ करती थी। दिन भर वह हॉकी खेलना पसन्द करता था। जब भी उसे समय मिलता, तो हॉकी के लिए निकल जाता था। तीसरा भाई जो था, उसे बढ़िया-बढ़िया खाना खाने में बहुत रुचि थी, जिसके लिए वह नए-नए व्यंजन बनाना सीखता रहता था। सीखते सीखते उसे बहुत ही अच्छे-अच्छे व्यंजन बनाने आ गए थे। इनकी माँ जो किसान की पत्नी थी, वह सदैव बड़े बेटे के अलावा बाकी दोनों को दिन-भर डाँटा करती थी और कहती थी, "इन सब फालतू कामों में मन लगाने से कुछ नहीं होगा, तुम सिर्फ पढ़ाई पर ध्यान दो। जैसे तुम्हारा बड़ा भाई दिन-भर पढ़ाई करता है।" लेकिन बाकी दोनों भाइयों को अपने-अपने काम में बहुत मजा आता था, चाहे उनकी माँ जितनी भी गुस्सा करे, वह अपने ही काम में लगे रहते थे।

कुछ साल बाद तीनों ही भाई बड़े हो गये। बड़े बेटे का चुनाव एक कॉलेज के प्रवक्ता के रूप में हो गया। दूसरे बेटे का चुनाव भारत की हॉकी टीम में हो गया, लेकिन तीसरा बेटा जिसका चुनाव किसी में भी नहीं हुआ, वह बहुत दु:खी रहता था। अचानक एक दिन एक खाना बनाने की प्रतियोगिता हुई, जिसमें उसने प्रतिभाग किया। माँ ने भी बेमन से उसे प्रतियोगिता के लिए भेज दिया। प्रतियोगिता में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया और फाइव स्टार होटल में उसे एक सैफ की नौकरी मिल गयी। अब तीनों ही भाई अपने-अपने काम में महारत हासिल कर बहुत बड़े आदमी बने। पिता को भी अपने तीनों बच्चों पर बहुत गर्व हुआ। अब उनकी माँ को समझ में आया कि केवल पढ़ाई ही सब कुछ नहीं होती, किसी भी क्षेत्र में हम महारत हासिल कर अपने जीवन को आगे बढ़ा सकते हैं और एक सम्मानजनक जीवन जी सकते हैं। दुनिया हर गुण की पहचान करती है।

संस्कार सन्देश-

हमें किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए क्योंकि किस्मत सभी के साथ चलती है।

कहानीकार
अंजनी अग्रवाल (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० सेमरुआ, सरसौल
कानपुर नगर (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/